



## Be Mains Ready

अजयशंकर प्रसाद और अज्जेय की कहानी-कला का उद्घाटन करते हुए उनके बीच की समानता और असमानता पर प्रकाश डालिये।

26 Jul 2019 | रवीजिन टेस्ट्स | हिंदी साहित्य

### दृष्टिकोण / व्याख्या / उत्तर

प्रसाद व अज्जेय दोनों ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। दोनों ही कर्वा पहले हैं, कहानीकार बाद में। इसलिये इनकी कहानियों में बहिर्मुख, प्रतीक व लय जैसे मूलतः काव्यात्मक तत्त्वों की सघन उपस्थिति देखी जा सकती है। संवेदना के स्तर पर भी दोनों मन के भीतर जाकर मानसिक यथार्थ की तहों को खोलते हुए अंतरमन का सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं।

प्रसाद प्रेमचंद के समकालीन हैं कति कहानी कला की दृष्टि से उनसे पर्याप्त भिन्न हैं। प्रसाद की कहानियों में रोमांटिक (स्वच्छन्दतावादी) दृष्टिकोण दखिता है। वे अपनी कहानियों में (नाटकों की तरह) अतीत की पृष्ठभूमि लेते हैं। राष्ट्रवाद तथा सांस्कृतिक आदर्शवाद उनकी संवेदना का केंद्र बंदु है इसलिये प्रसाद की अनेक कहानियाँ देशप्रेम जैसे विषयों पर लिखी गई हैं। ये सारी विशेषताएँ प्रसाद की कहानी 'पुरस्कार' में देखी जा सकती हैं। जिसकी नायिका 'मधूलिका' प्रेम व देशप्रेम के गहरे अंतरद्वन्द्व से गुजरकर अंततः देशप्रेम के पक्ष में नरिणय लेती है, परंतु अपने लिये पुरस्कार के रूप में मृत्युदण्ड ही मांगती है।

अज्जेय कई दृष्टियों से प्रसाद की परंपरा के ही रचनाकार हैं। इनकी कहानियों में सूक्ष्म विश्लेषणात्मक व वैचारिक परिपक्वता दखिता है। अज्जेय की कहानियों पर प्रायः के मनोवश्लेषणवाद तथा सारत्र के असत्त्ववाद का प्रभाव भी है। अज्जेय की कहानियों के पात्र प्रायः शहरीकरण के कारण अपनी जड़ों से कटे हुए मध्यमवर्गीय व्यक्ति हैं। शहरों का यंत्रिकरण इन पात्रों के भीतर एक ऊब व घुटन पैदा कर देता है। वडिंबना यह है कि इस ऊब व घुटन का नविरण नहीं होता बल्कि यह जीवन का एक अंग बन जाती है। इसे अज्जेय की कहानी रोज/गैंग्रीन में बेहद स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कहानी का केन्द्रीय वाक्य 'ऐसा तो रोज होता है' इसी ऊब व नएपन के अभाव को प्रदर्शित करता है।

प्रसाद की कहानी के पात्रों में यह ऊब नहीं है। वहाँ द्वन्द्व तो है पर एक उत्साह भी है। यह संभवतः प्रसाद के आदर्शवाद के कारण संभव हो पाया है। इसी आदर्शवाद के प्रभाव में प्रसाद की कहानियों के नारी चरित्र (मधूलिका, चम्पा) अत्यंत सशक्त बन कर उभरे हैं। अज्जेय ने अपने आप को आदर्श के उस धरातल से मुक्त कर लिया है जिससे पात्र यथार्थ के और करीब आ गए हैं। इसी कारण दोनों के बीच श्लिपगत साम्य में भी संवेदना का पर्याप्त वैषम्य स्पष्ट दखिता है। अज्जेय ने प्रसाद की परंपरा में कुछ जोड़ा भी है और कुछ छोड़ा भी है। कुल मिलाकर इससे परंपरा कुछ अधिक समृद्ध ही हुई है।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/be-mains-ready-daily-answer-writing-practice-question/papers/2019/be-mains-ready-day-46-hindi-literature-1-jaishankar-prasad-and-agyey/print>